__आकाश दुबे__ शारजाह के इब्न सेना हाई स्कूल में पढ़ते हैं। आकाश ऐतिहासिक और विज्ञान-कथाएँ पढ़ने के शौकीन हैं। उन्हें खेल और दौड़ भी पसन्द हैं। कुछ समय पहले तक वे हर रोज़ तीन-चार किलोमीटर दौड़ते थे। और टैनिस खेलते थे। आकाश को कार के छोटे मॉडल इकट्ठा करने का शौक है। और बड़ा होकर वे अपना कारोबार करना चाहते हैं।

इस साल जनवरी के अन्त में पता चला कि आकाश कैंसर का शिकार हो गए हैं। उन्हें खून का कैंसर है। चेन्नई में उसका इलाज चल रहा है। स्वयं बीमारी से लड़ने के बावजूद बारहवीं में पढ़ने वाले आकाश ने चेरेटी क्रिकेट मैच आदि से कुछ पैसा जोड़ा है। इन पैसों को उन्होंने मध्यप्रदेश में छोटे पुस्तकालय खोलने और आँध्रप्रदेश में गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए दिया है। साल 29 अगस्त को आईआईटी चेन्नई में होने वाली टैरी फॉक्स दौड़ को शुरू करने में आकाश की बड़ी भूमिका रही है। तुम में से जो भी इसमें भाग ले सकते हैं या इस खबर को आगे पहुँचा सकते हैं, ज़रूर पहुँचाना।

शारजाह का एक आम स्कूली दिन

टू! टूटू! टू!

मेरा नाम आकाश है। और यह मेरा ही अलार्म बज रहा है। सुबह के पाँच बज गए है ना! उठने में देर बिलकुल नहीं की जा सकती है। देर का मतलब है बस से हाथ धो बैठना।

“उठो, बेटा!” इतने में दूध का गिलास और केला लिए माँ की आवाज़ सुनाई दी।

किसी तरह मान-मनुहार कर माँ से पाँच मिनट और सो लेने की बात मनवाई। लेकिन पाँच कब दस मिनट हुए पता ही न चला। तब दूध ठण्डा होने और बस छूट जाने का उन्होंने जो डर दिखाया कि फिर बिस्तर छोड़ने के सिवा कोई चारा न था।

फुर्ती से नहाया-धोया, कपड़े पहने, नाश्ता किया और दौड़ा बस स्टैण्ड की ओर। 5.50 हो रहे थे 6 बजे बस आ जाती है...

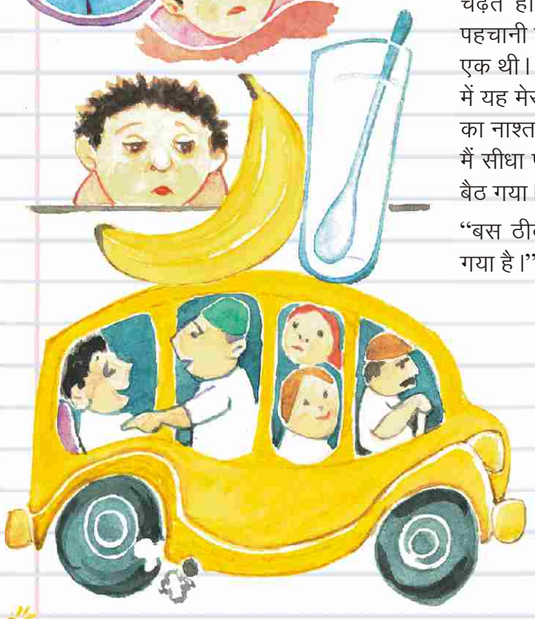

बस में...

बस निकलने ही वाली थी कि मैं पहुँच गया। वैसे यह कोई आसान काम नहीं था और तब तो बिलकुल नहीं जब आप दौड़ते हुए आए हों और आपकी पीठ पर 8 किलो का बस्ता उछल-कूद रहा हो। बस की सीढ़ियाँ चढ़ते ही धूल, पसीने और सालों से सीटों पर लगे चमड़े की जानी-पहचानी गंध ने मेरा स्वागत किया। यह स्कूल की सबसे पुरानी बसों में से एक थी। और इस गंध को बनने में कोई 25 बरस लगे थे। अगर इस बस में यह मेरा पहला दिन होता तो इस गंध को सूँघने के बाद शायद मैं सुबह का नाश्ता पेट में न रख पाता। खैर, अब तो आदत हो ही गई थी इसकी। मैं सीधा पीछे गया। मेरे सारे दोस्त वहीं बैठते थे। मैं अहमद की बगल में बैठ गया। “कैसे हो?”

“बस ठीक-ठाक। यार, सारा गृहकार्य कर लिया? मेरा गणित का रह गया है।” अहमद बोला।

“यह तीसरी बार है जब तुमने गणित का गृहकार्य छोड़ दिया। टीचर मार डालेंगी तुम्हें।” मैं बोला।

“इसीलिए तो तुमसे तुम्हारी कॉपी माँग रहा हूँ।”

“नहीं भाई, मैं नहीं दे सकता। पिछली बार तुमने मेरा पूरा का पूरा टीप लिया था और पकड़ा मैं गया। घर पर शिकायत पहुँच गई थी। माँ ने क्या डाँटा...। नहीं, अब की बार नहीं दे सकता।”

“सच कहता हूँ इस बार थोड़ा-बहुत बदल दूँगा। पूरा नहीं तो कम से कम आधा ही करने देना।” अहमद बोला।

“बढ़िया।” मैंने सोचा अब मैं और अहमद कुछ खेल सकते हैं। एक घण्टा बस में बैठे-बैठे और करते भी क्या?

स्कूल में...

8.25 बजे तक हम स्कूल पहुँच गए थे। सोचा था 5 मिनट बचे हैं तो कुछ खेल-वेल लेंगे। पर बस से उतरते ही ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग हुई यानी स्कूल शुरू।

कक्षा

कक्षा में बैठने की जगह रोज़-रोज़ बदलती है यहाँ। ताकि सबको सब सीटों पर और सबके पास बैठने का मौका मिले। हर दिन हम एक पीछे वाली सीट पर बैठते हैं जब तक कि लाइन के आखिर तक न पहुँच जाएँ। अगले दिन पास वाली लाइन की पहली सीट हमारी होती है। कल मैं सबसे पीछे था इसलिए आज सबसे आगे वाली सीट पर बैठ सकूँगा। वैसे इस सीट पर बैठने वाले कम ही उम्मीदवार होते हैं। इस सीट के एकदम सामने टीचर जो होती हैं। मुझे भी यह सीट कोई खास पसन्द नहीं। पर, आज कोई डर नहीं। आज मेरा काम पूरा है।

हमारी क्लास टीचर आती ही होंगी। आते ही सबसे पहले वो प्रार्थना कराएँगी, फिर हाज़िरी लेंगी। इसके बाद शुरू होगी रोज़ की दिनचर्या। 45-45 मिनिट के 7 पीरियड! वो तो राहत है कि हर दो पीरियड के बीच बातचीत करने, कक्षा में घूमने के लिए 5 मिनट मिल जाते हैं।

आज हमारा पहला पीरियड अँग्रेज़ी का है। हमारी क्लास टीचर ही हमें अँग्रेज़ी पढ़ाती हैं इसलिए हाज़िरी के तुरन्त बाद कलिनानी मैडम अँग्रेज़ी पढ़ाने लगेंगी।

मैडम के क्लास में घुसते ही हमने एक लम्बे सुर में कहा, “गुड मॉर्निंग मैडम।” इसपर उन्होंने मुस्कुराते हुए झिड़का, “अरे भाई! यह ढीला-ढाला सुर छोड़कर ज़रा चुस्ती से कहो कि लगे एक अच्छी नींद से उठकर आए हो।”

इस बार हमने पूरी फुर्ती दिखाई। इसके बाद हाजरी हुई। हाजरी के बाद पढ़ाई।

उम्मीदों की दौड़

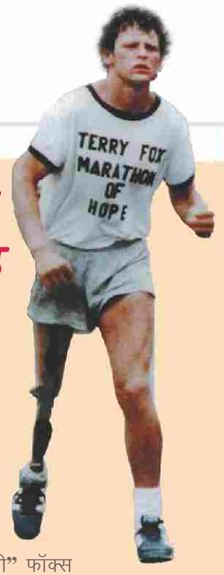

टैरेंस स्टेनली “टैरी” फॉक्स
(28 जुलाई 1958 - 28 जून 1981)

टैरी फॉक्स को हड्डी का कैंसर था। 1980 में कैंसर पीड़ितों की मदद के लिए पैसा जुटाने के उद्देश्य से उन्होंने एक दौड़ शुरू की। उन्होंने इस दौड़ को नाम दिया – उम्मीद की दौड़।

12 अप्रैल 1980 के दिन टैरी इस दौड़ पर निकले – कनाडा के एक से दूसरे सिरे की 8000 किलोमीटर की दौड़। उन्होंने सोचा था कि वे हर रोज़ 42 किलोमीटर दौड़ लेंगे। इस हिसाब से यह दौड़ पूरी करने में उन्हें 185 दिन लगने थे। कैंसर के बारे में लोगों को जागरूक करने के इरादे से वे कनाडा के घने बसे इलाकों से गुज़रे। लेकिन तबीयत खराब हो जाने से सितम्बर में उन्हें यह दौड़ रोकनी पड़ी। तब तक वे 5372 किलोमीटर दौड़ चुके थे। अस्पताल में ही उन्हें सूचित किया कि उनकी उम्मीदों भरी यह दौड़ रुकेगी नहीं। हर साल यह दौड़ होगी जब तक कैंसर खत्म करने का टैरी फॉक्स का सपना पूरा नहीं हो जाता।

1981 में कनाडा में हुई इस दौड़ में 3 लाख लोगों ने भाग लिया। इस एक दिन में 35 लाख डॉलर इकट्ठा हुए। 2002 में 53 देशों में 620 जगह टैरी फॉक्स दौड़ हुई। अनुमान है कि इसमें 25 लाख लोगों ने भाग लिया।

"चलो! आज हम देखेंगे कि किसी चीज़ पर विस्तार में कैसे लिखेंगे।" कहते हुए टीचर ब्लैकबोर्ड की ओर चल दीं।

आमतौर पर टीचर एक पीरियड में आधे से कुछ ज़्यादा समय तक समझाती हैं। बाकी के समय के लिए कोई काम दिया जाता है जिसमें समझाई गई बातों को हमें उपयोग में लाना होगा। जिस दिन वे परीक्षा लेना चाहती हैं उस दिन पढ़ाई नहीं होती। कभी-कभी जब हम जल्दी काम कर लेते हैं तो जल्दी छुट्टी दे देती हैं। हाँ, पीरियड खत्म होने से पहले गृहकार्य अक्सर दिया जाता है।

खेल घण्टी

हमारे स्कूल में दो खेल घण्टियाँ होती हैं। पहली 3 पीरियड के बाद होती है। यह केवल छठी से ग्यारहवीं तक की लड़कियों और पाँचवीं तक के सारे बच्चों के लिए होती है। लड़कों की खेल-घण्टी में छठी से ग्यारहवीं तक के और ए श्रेणी (यानी 12वीं) के लड़के बाहर नज़र आते हैं। लड़कियों की खेल-घण्टी के समय क्या ज़बरदस्त भागा-दौड़ी मची रहती है। खेलने के चक्कर में छोटे बच्चे अपना खाना कहीं फेंक देते हैं। खाना घर गया तो पिटाई होगी! उन्हें झूलों पर सबसे पहले कब्ज़ा करने की धुन सवार रहती है। कुछ बड़े बच्चे क्रिकेट, फुटबॉल पर हाथ आज़माना पसन्द करते हैं। छोटी लड़कियाँ भी मैदान में खेलना पसन्द करती हैं पर बड़ी लड़कियाँ इधर-उधर बैठ खाना खाते हुए गप्पें हाँकती ज़्यादा नज़र आती हैं। हाँ, कुछ लड़कियाँ बैडमिंटन और थ्रो बॉल खेलती भी दिखाई दे जाती हैं। जिस तरह सुबह बिस्तर छोड़ने से पहले के पाँच मिनट सबसे प्यारे होते हैं, उसी तरह खेल-घण्टी खत्म होने के बाद के पाँच मिनट खेल में लगे बच्चों को प्यारे होते हैं।

लड़कों की खेल-घण्टी में अफरा-तफरी कम होती है। सारे बच्चे मैदान में होते हैं जहाँ दो जगह क्रिकेट मैच और एक जगह फुटबॉल मैच चल रहा होता है। कुछ यूँ ही घूम-फिर रहे होते हैं।

पूरी छुट्टी

छुट्टी होते ही सारी कक्षाओं के दरवाज़े खुल जाते हैं। हर दरवाज़े से बच्चों का हुजूम निकल पड़ता है। कुछ दौड़ पड़ते हैं अपनी बसों की ओर और कुछ झूलों पर। आज की आखरी सवारी की अपनी इच्छा पूरी करने। बसों के हॉर्न, बच्चों के शोर से पूरा माहौल गरमा जाता है। यह कुछ ही मिनटों की बात है। बच्चों के बसों में बैठते ही तूफान थमने जैसी शान्ति छा जाएगी।

एक लड़का नाम लिखवाने के लिए एक स्कूल में गया। प्रिन्सिपल ने कहा, "अब कोई सीट नहीं है।"

लड़का बोला, "मेरे पिताजी कारपेन्टर हैं। इसलिए आप सीट की चिन्ता न करें। वह मैं उनसे बनवा लूँगा।"

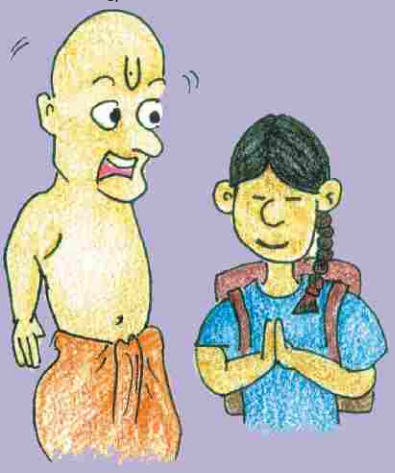

एक किशोरी मन्दिर में प्रार्थना कर रही थी, "हे भगवान! हैदराबाद को कर्नाटक की राजधानी बना दो।"

पुजारी ने पूछा, "बेटी, ऐसी बात क्यों कह रही हो?"

किशोरी ने बताया, "दरअसल मैंने परीक्षा में गलती से ऐसा ही लिख दिया है।"

एक ग्राहक ने अण्डे बेचने वाले से पूछा, "क्या तुमने कभी सोचा है कि अण्डे में से बच्चे निकलते कैसे हैं?"

"हाँ, सोचा तो है। इस बात पर मुझे आश्चर्य भी होता है। लेकिन इससे ज़्यादा आश्चर्य इस बात पर होता है कि वह बच्चा अण्डे के अन्दर कैसे घुसता है?" दुकानदार ने कहा।

चित्रः पूजा चटर्जी